विनोबा भावे : सर्वोदय एवं त्रिसूत्री शिक्षण

डा. शिखा वर्मा *

विनोबा का दर्शन प्रत्यक्ष रूप से उनके अध्ययन और प्रयोगों पर आधारित है । समाज की विभिन्न परिस्थितियों का अवलोकन करने के पश्चात् वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संपूर्ण समाज की व्यवस्था ऐसी है कि उसमें अशांति, हिंसा, उत्पीडन, अपराध, रोग का होना अवश्यम्भावी है । गांधी जी ने एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें सभी सुख से रह सकें और हिंसा, उत्पीडन, अपराध आदि की गुंजाईश ना रहे । इसे उन्होंने 'सर्वोदय' की संज्ञा दी । विनोबा नें सर्वोदय का मूल गाँधी जी से स्वीकार किया और उसे अपनें अध्ययन, चिंतन और प्रयोगों द्वारा विकसित किया. विनोबा नें चिंतन और क्रियाशीलता का तथा कर्म और ज्ञान का अद्भुत संगम स्थापित किया ।

गाँधी जी के पश्चात् सर्वोदय की बागडोर जिस समय आचार्य विनोबा नें अपनें हाथ में संभाली उस समय देश स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत था, लोगों के पास दो वक्त की रोटी का भी इंतज़ाम न था. ऐसे में विनोबा जी को एक विचार आया कि देश से ज़मींदारी प्रथा को समाप्त कर भूमिहीन लोगों में भूमि का वितरण कर दिया जाये जिससे लोग अपना तथा अपने परिवार का गुज़ारा आसानी से कर सकें. इसके लिए उन्हों नें एक सतत आन्दोलन की प्रक्रिया अपनाई उसका नाम रखा 'भूदान आन्दोलन'।

आचार्य विनोबा भावे नें भूदान यज्ञ को सफल बनानें हेतु नगर-नगर भ्रमण किया एवं लोगों को भूमि दान करने के लिए प्रेरित किया. उनका कहना था कि "समाज-व्यवस्था स्पर्धा और विषमता की नींव पर खड़ी है। मैं स्पर्धा की जगह समानता और सहकारिता के आधार पर नयी व्यवस्था लाना चाहता हूँ, जिस तरह चार भाइयों की माँ एक होती है

* असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, बी.एड. विभाग , का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैजाबाद

और माँ का सब पर प्रेम बराबर होता है, उसी प्रकार भूमि सबकी है, किसी एक की नहीं । एक गाँव की भूमि उस गाँव में रहने वाले सभी व्यक्तियों की है, न कि दो-चार की. यह क्या कि कुछ लोगों के पास ज़मीन रहे और कितने ही लोगों के पास ज़मीन न रहे, ऐसे समाज में शांति नहीं हो सकती । लोगों को यह सत्य मान कर चलना चाहिए कि सारी ज़मीन ईश्वर की है. अगर भूमि का स्वामित्व समाज का हो तो मौजूदा असंतोष ख़त्म हो जाएगा और प्रेम तथा सहकार का नया ज़माना शुरू हो जाएगा", इस प्रकार विनोबा जी ने भूदान यज्ञ को आगे बढ़ाने के लिए अनेकों प्रकार से प्रयास किया ।

एक बार विनोबा जी ने तेलंगाना के उस जिले में पदयात्रा करने का निश्चय किया जहाँ साम्यवादी छापामार सरकार की सेना से लड़ रहे थे । जिन गांवों में आचार्य विनोबा भावे गए उनमे से एक गाँव में तीन हज़ार लोगों का निवास था, गाँव में खेती योग्य भूमि भी तीन हज़ार एकड़ थी, किन्तु सारी भूमि नब्बे परिवारों की मिल्कियत थी बाकी परिवार भूमिहीन थे । यही वह पोचमपल्ली गाँव था जहाँ 18 अप्रैल 1951 के दिन आचार्य जी के मन में भूदान विचार के जन्म हुआ. भूमिहीन हरिजन विनोबा जी के पास आये और गुज़ारे के लिए कम से कम 80 एकड़ भूमि दिलाने कि मांग की । विनोबा जी ने सोचा कि इस तरह कुछ लोगों को भूमि भले ही मिल जाये लेकिन इससे समस्या का समाधान नहीं होने वाला । तदुपरांत विनोबा जी नें भूमि वाले भाइयों से अपील की कि वे भूमिहीन व्यक्तियों को कुछ भूमि दान स्वरुप दें ताकि वे भूखे न रहें इस अपील का सकारात्मक परिणाम फलित हुआ और लोगों में इस दान के प्रति रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास हुआ।

ग्राम-दान:

ग्राम-दान के सामूहिक निर्णय द्वारा एक सामाजिक क्रांति लाने की चेष्टा की गयी तथा इसमें भूमि के व्यक्तिगत स्वामित्व के पूर्ण विसर्जन की बात थी । ग्राम-दान में ज़मीन का स्वामित्व ग्राम सभा का होगा । भूमिहीनों को भूमि का बीसवां हिस्सा देने के बाद जो ज़मीन रहेगी उसका वे उपयोग करते रहेंगे पर उसका स्वामित्व ग्राम सभा को

समर्पित कर दिया जाएगा । ग्राम-दान में प्रत्यक्ष समर्पण करना है । इस विचारधारा में सहयोग और समता का विकास होगा. ऐसे विकसित स्वरुप में जो समानता आएगी उसे विनोबा जी समाज के लिए कल्याणकारी मानते हैं । ग्राम-दान के कारण ऐसी कल्याणकारी समता का साक्षात्कार देश को हुआ तथा ग्राम-दान जब प्रकट हुआ तो उस पर कोई आक्षेप नहीं आया।

विनोबा जी यह भी कहते थे कि "जब तक ग्राम-दान नहीं होगा और गाँव-गाँव में ग्राम परिवार नहीं बनेगा तब तक हम नए युग के लायक नहीं हो सकेंगे ।" नया युग विश्व राज्य का युग है उसका एक 'ट्रिब्यूनल' बनेगा, ग्राम समाज के बिना कोई बात नहीं बनेगी । इसलिए हमें भी अमेरिका तथा रूस की तरह अपनें हर गाँव को सर्वोदय रिपब्लिक बनाना होगा । वे मानते थे कि "प्रारंभिक अवस्था में शासन का एक ढांचा आवश्यक होगा लेकिन यह नहीं मानते थे कि आगे भी इसकी आवश्यकता बनी रहेगी । वे यह भी मानते थे कि शासनहीन समाज की स्थापना के लिए एकाधिकारवादी तानाशाही ज़रूरी है, उलटे वर्तमान में हम सत्ता और प्रशासन के विकेंन्द्रीकरण के पक्ष में हैं । अंतिम स्थिति में जोर-ज़बरदस्ती के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी बल्कि शुद्ध नैतिक सत्ता चलेगी । इस प्रकार स्वशासी समाज की स्थापना के लिए स्वावलंबी इकाइयाँ कड़ी करनी होंगी । उत्पादन, वितरण, सुरक्षा, शिक्षा आदि सबका प्रबन्ध स्थानीय रूप से करना होगा । केन्द्र के पास कम से कम सत्ता होगी ।"

भूदान, ग्राम-दान तथा अन्य इसी तरह के दान में गाँव के किसानों का ही नहीं बल्कि शहर में रहने वाले कर्मचारियों और औद्योगिक श्रमिकों को भी इस आन्दोलन में भाग लेने का अवसर देने की दृष्टि से विनोबा जी ने दान का दायरा विस्तृत किया जिसमें इन सबका समावेश था ।

श्रमदान: सर्वोदय के किसी ख़ास कार्यक्रम में अपने श्रम का अमुक एक हिस्सा देना,

संपत्तिदान: अपनी संपत्ति का या आय का या खर्च का एक निश्चित अंश सर्वोदय आन्दोलन के लिए देना,

बुद्धिदान: अपनी बुद्धि शक्ति और ज्ञान का उपयोग सर्वोदय के आदर्श की सिद्धि के लिए करना,

जीवनदान: आन्दोलन के लिए अपना सारा जीवन और शक्ति समर्पित करना ।

आन्दोलन द्वारा निर्धारित इन सब ऊँचे लक्ष्यों एवं नियमों का परिणाम बहुत अच्छा था । इसलिए 1963 में ग्रामदान का एक सुधरा आसान रूप, सुलभ ग्रामदान के नाम से चलाया गया । विनोबा जी यह जानते थे कि वर्तमान में यदि सर्वोदय को कोई सही दिशा दे सकता है तो वह है शिक्षा: इसके लिए उन्होंने एक शिक्षण कार्यक्रम का निर्धारण किया उसका नाम रखा त्रिसूत्री शिक्षण उनकी दृष्टि से शिक्षा का जो त्रिसूत्री कार्यक्रम का निर्धारण किया वह है योग, उद्योग और सहयोग ।

विनोबा के शब्दों में हमें मानव के पूर्ण गुण विकास 'अपेक्षित है', उनका कहना था "कुदरत से जितना अलग रहेंगे उतना ही कमनसीब साबित होंगे यह बुनियादी सिद्धांत है ।" विनोबा जी सर्वोदय समाज के लक्ष्य के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था चाहते थे, जिसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आत्मसंयमी विनयी आत्मनिर्भर, समाजसेवी और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना था जिससे मानव जीवन के तीनों पक्षों सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक में समन्वय स्थापित किया जा सके । विनोबा की दृष्टि में विद्यार्थी का ज्ञान इतना व्यावहारिक होना चाहिए जिसे प्राप्त कर के आगे चल कर विद्यार्थी दस गुना समाज को दे सके । ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा होनी चाहिए जिसमें ज्ञान तथा कर्म का समन्वय हो जो हमारे जीवन में अधिक से अधिक प्रकृति के निकट ले जाये क्यों कि कुदरत के साथ जितना ज्यादा संपर्क होगा, जीवन उतना ही संपन्न होगा ।

विनोबा जी का मत है कि समाज निर्माण मूलत: एक शिक्षा प्रक्रिया है । आचार्य विनोबा अहिंसात्मक शोषण रहित वर्ग भेद और वर्ग विद्वेष से मुक्त समाज चाहते थे इसके निर्माण के लिए उन्होंने जहाँ

एक ओर शिक्षा प्रक्रिया में आध्यात्म उद्योग और सहयोग को मुख्य केन्द्र बनाया, वहीं दूसरी ओर सार्वजनिक जीवन में भी कला कौशल, भूदान, श्रम दान, संपत्ति दान आदि विचारों को आत्मसात करा कर लोकजीवन में एक खास ढंग का उत्तरदायित्व प्रसारित किया इस प्रकार विनोबा मानव कल्याण और असीम शक्ति के लक्ष्य को ले कर सर्वांगीण विकास का समग्र विचार प्रस्तुत करते हैं ।

यद्यपि प्रचलित समाज में क्रन्तिकारी परिवर्तन लाने के उद्देश्य से अनेक प्रयास हुए तथापि समस्त प्रयासों में शिक्षा को समाज से उत्पादकता से और आध्यात्म से सम्बंधित करते हुए उनका समन्वयात्मक रूप प्रस्तुत नहीं कर पाए । इसी क्रम में आचार्य विनोबा ने एक समन्वयवादी दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए अपनी शिक्षा योजना में योग, उद्योग और सहयोग के तीन सूत्रों के महत्व को स्वीकार किया है । योग के अंतर्गत आत्मनियंत्रण और आत्मिक ज्ञान, उद्योग के अंतर्गत जीवन निर्वहन हेतु किसी श्रम्युक्त उद्योग या कौशल में प्रवीणता तथा सहयोग के रूप में सहजीवन अर्थात विश्व के प्रत्येक अंश में एकात्मकता की स्थापना के आदर्श और प्रयोग सम्मिलित हैं । आचार्य विनोबा ने ब्रिटिशकालीन शिक्षा से प्रभावित वर्तमान शिक्षा-प्रणाली को अनुपयोगी मानते हुए उसे भारतीय परिवेश और आवश्यकताओं के अनुरूप आध्यात्मिक मूल्यों और मानवीय आदर्शों से पोषित जीवनोपयोगी शिक्षा सामाजिक पर्यावरण के माध्यम से देने की एक अपूर्व योजना प्रस्तुत की है । इस तरह विनोबा जी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को एक संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं:

1. नियमित रूप से सूत कातना
2. ग्रामोद्योगी वस्तुओं का प्रचार-प्रसार करना
3. गाय का दूध उपयोग में लाना
4. महीने में एक बार भंगी का कम करना
5. बुनियादी तालीम के अन्य सिद्धांतों का अनुगमन करना
6. साक्षरता का प्रसार करना

7. समाज सुधार करना

इस प्रकार विनोबा जी मूल्यों कि शिक्षा पर बल देते थे जो जीवन कि समस्याओं से संघर्ष और कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए अनुभव और कर्म पर आधारित सहज ज्ञान प्राप्ति की शक्ति का विकास कर सके ।

सन्दर्भ सूची :

1. मीरा भट्ट: शिक्षण विचार, 1991
2. विनोबा: Thoughts on Education, 1964
3. विनोबा: शिक्षा की दिशा मैली, अक्टूबर 1979
4. सरयू प्रसाद चौबे: भारत के कुछ शिक्षा दार्शनिक, 1963
5. विनोबा: आचार्य कुल,1973

****